Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 Impact Factor - 7.139 Indexed (SJIF)

05 Sept. 2021 Special Issue- 43 Vol. I

Literature, Culture and Media

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

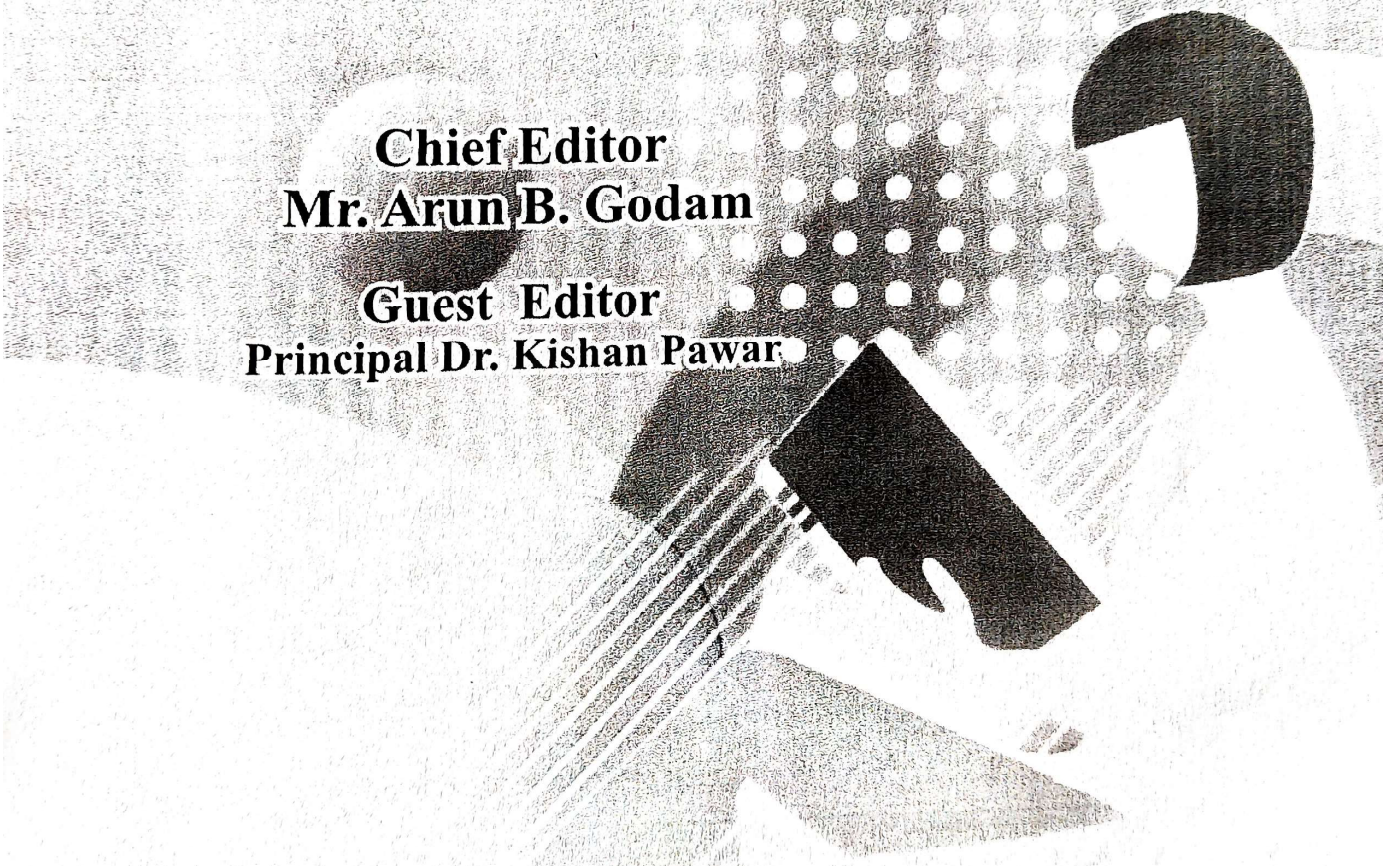

Guest Editor
Principal Dr. Kishan Pawar

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 43, Vol. 1 Sept. 2021	Peer Reviewed SJIF	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

14. साहित्य, संस्कृति और मीडिया के उपलक्ष्य में प्रस्तुत शोधालेख "आधुनिक साहित्य में चित्रित मनोवैज्ञानिकता" 50
प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी

15. 'अर्ध्दनारीश्वर' में भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय 52
प्रा.डॉ. काकासाहेब गंगणे, , प्रा.डॉ. गजानन सवने

16. श्री तेजपाल धामा के कथात्मक साहित्य में भारतीय संस्कृति 54
सुश्री .स्वाति हिराजी देडे , डॉ.विनोदकुमार विलासराव वायचळ

17. साहित्य और संस्कृति 56
प्रा.डॉ. वडचकर शिवाजी

18. वाचन संस्कृती आणि माध्यमे 58
प्रा.अशोक शि.खेत्री

19. वाचनसंस्कृती 6
प्रा.ज्ञानेश्वर को. गवते

20. ऑनलाइन शिक्षण आणि आपण
सह.प्रा.उघडे सुहास मुरलीधर

21. साहित्य, संस्कृति व प्रसार माध्यमे
डॉ. लक्ष्मण बळीराम थिट्टे

22. वाचन संस्कृतीवर समाजमाध्यमांचा पडलेला प्रभाव
प्रा. डॉ. रमेश औताडे

23. वाचनसंस्कृती आणि प्रसारमाध्यमे
सहा. प्रा.डा. रवींद्र बाबासाहेब ढास

24. अध्ययन-अध्यापनात माध्यमांची भूमिका
डॉ. सीता ल.केंद्रे

25. साहित्य आणि प्रसार माध्यमे
प्रा.डॉ.लक्ष्मण गित्ते

120

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 43, V[illegible] | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Sept. 2021 | SJIF | Impact Factor : 7.139

‘अर्ध्दनारीश्वर’ में भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय

प्रा.डॉ. काकासाहेब गगाण
सहयोगी प्राध्यापक,
सुंदररावजी सोंळके महाविद्यालय, माजलगांव, जि. बीड

प्रा.डॉ. गजानन सवने
सहायक प्राध्यापक
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, जि. बीड

प्रस्तावना :—

विष्णु प्रभाकर जी हिन्दी साहित्य के मुर्धन्य साहित्यकार हैं। जिन्होने साहित्य के लगभग सभी विधाओं में उत्कष्ट लेखन कार्य किया हैं। विष्णु प्रभाकर जी को देखकर कहा जाता सकता है कि उनके विशाल ह्रदय मानवता के लिए समर्पित हैं। व्यक्तित्व की यही समस्त विशेषताएँ हमे उनके साहित्य में दष्टिगत होती। ‘आवास मसीहा’ का लेखन कार्य उन्होने चौंदह वर्षो के अथक परिश्रम के बाद किया था। जो कि साहित्य जगत की एक अविस्मरणीय घटना हैं। विष्णु प्रभाकर जी ने नाटक विधा में विलक्षण योगदान हैं। इसके साथ उन्होने उत्कष्ट कहानी एवं उपन्यासों का सृजन किया हैं ‘अर्ध्दनारीश्वर’ यह इनका प्रसिध्द उपन्यास हैं। इस कृति को साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ हैं। उनकी प्रत्येक रचना में मानवीय मूल्य एवं आदर्शो के साथ बृहत सामाजिक हित भी भावना निहित होती हैं।

‘अर्ध्दनारीश्वर’ उपन्यास घटना प्रधान एवं चरित्र प्रधान हैं। उसमें बलात्कार की घटना प्रमुख हैं। सुमिता यह प्रमुख नारी चरित्र हैं। यह उपन्यास नारी विमर्श का महत्वपूर्ण हैं। बलात्कार पीडित नारी की संवदेना को सृजित करने काम विष्णु प्रभाकरजी ने किया है। उसके साथ भारतीय एवं पाश्चात्ये संस्कृती का समन्वय करके नये नारी.पुरुषों के मापदंड को समाज के सामने रखने काम किया हैं। ‘अर्ध्दनारीश्वर’ उपन्यास तीन खण्डों में विभाजित हैं। उपन्यास का पहला खण्ड व्यक्ति का मन है, जिसमें पात्रों के मानसिक अंतर्द्वन्द्व को अंकित किया है। समाज मन दुसरा खण्ड है, जिसमे विभिन्न घटनाओं को लेकर सामाजिक प्रतिकियाओं का आकलन है। तीसरा खंड अन्तर मन है, जिसमें व्यक्तियों की कुंठाओं एवं शंकाओं को दूर कर एक स्वस्थ मानसिकता की आधार भूमि तैयार की गई है।

विष्णू प्रभाकर जीने बलात्कार नारी को भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति में बलात्कार पीडित नारी को भारतीय संस्कृति में बलात्कार पीडित नारी कों बचछलन, अभागी नारी के रुप में देखते है। तो पाश्चात्य संस्कृति में नारी को बचछलन कहकर नहीं पुकारते है। ‘अर्ध्दनारीश्वर’ उपन्यास की सुमिता अपने पति, नंदन और बच्चों की गुण्डो से जान बचाने के लिए गुण्डो के साथ जाती है। सुनिता कहती है, “मैं कहती हूँ, उसे मत छुना। मैं चलूँगी तुम्हारे साथ।”[1] इसके बाद सुमिता को गुण्डे बलात्कार कर देते है। लेखकने बलात्कार करनेवाले गुण्डे के मुँह यह कहलाते है की, बलात्कार क्यों कर रह हैं। एक गुण्डा कहता है, “मैं इसे मार कर शहिद बना दूँ। नहीं, नहीं, यह जिन्दा रहेगी आर तडपेगी गरम रेत पर पडी मछली की तरह। मुझे इन्तकाम लेना है उन सफेद पोशों से ....।”[2] यह बदले के भावाना को आम नारी के जीवन को नरक बनाने काम यह कर रहें।

बलात्कार होने के, बाद भारतीय संस्कृति में नारी को समाज, घर के पति अलग नजरे से देखते है। सुमिता का पति अजित कहता है कि, “क्या यह सम्भंव नहीं कि रति किया में वह मुझ से सन्तुष्ट नहीं हो सकी, पर परम्परागत मूल्यों के कारण एक हिन्दू नारी होने के नाते उसने इस बात की कभी शिकायत नहीं की। नहीं करना चाही, लेकिन अनजाने और अनचाहे भी वह असन्तोष धीरे – धीरे जड जमाता रहा, उसके अपनी इच्छा से उनके साथ जाने का।” इसी प्रकार भारतीय संस्कति में पीडित नारीयों का साहारा बननेवाले सहदय वाले व्यक्ति मिल जाते हैं। लेकिन समाज पीडित नारीकों हीन नजरेसे देखते है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में बलात्कार पीडित नारी को मान सम्मान प्राप्त करके देते हैं। लेखक ने राजकली के माध्यम से भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का सम्नवय दिखायॉ हैं। राजकली कहती है, “बहुत सी युवतियॉ है, जो अपने यारों के साथ मुँह काला करती है या उनकी भाषा में कहूँ तो आनन्द मनाती है, भेद खुलने पर जरुर वे कुछ दिन के लिए बदनाम हो जाती है, फिर लोग उन्हे भूल जाते है। वे मेरी तरह हमेशा–हमेशा के लिए ‘अछुत’ नहीं हो जाती।”[4] राजकली कुछ दिन कुठाग्रस्त रहती है। उसके साथ शादी भी कोई करने को तैयार नहीं होता। लेकिन एक खिश्चिन अध्यापक विलयम उसके साथ शादी करता है और उसे बलात्कार पीडित होने के भय से मुक्ति मिलती है।

बहुविवाह पध्दती दोनों संस्कृति में है। भारतीय संस्कृति में पुरुष बहुविवाह करता है और नारी को बहुविवाह करने की अनुमती नहीं है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में नारी पुरुष दोनों ही बहुविवाह करते हैं। ‘अर्ध्दनारीश्वर’ उपन्यास में लेखक ने श्यामला पात्र के माध्यम से भारतीय संस्कति का फोल खोला हैं। वह अपने जीवन को पुर्नत्व लाने के लिए शादी करती है। वह तीन पुरुषों के साथ विवाह करती है लेकिन उसे कोई भी अपनाता नहीं है, इसलिए समाज उसे वेश्या समझाता हैं। श्यामला स्वंय कहती हैं, “नाना प्रकार के लांछन लगाते हैं यहॉ के लोग। वेश्यातक कहते है।”[5]

पाश्चात्य संस्कृति का मुक्त यौन सम्बन्ध [illegible] ‘अर्ध्दनारीश्वर’ उपन्यास में चित्रण किया है। [illegible] [illegible] के साथ उसी के रुप में नहीं आती क्योंकि [illegible] पर भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल [illegible]

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Peer Reviewed
ISSN : 2319 - 864[illegible]
Impact Factor : 7.139
Special Issue 43 Vol. 1
Sept. 2021
SJIF

पति से एकनिष्ठ है। इसलिए डेविड सुनिता से पुच्छता है कि क्या नहीं आती मेरे रुम में। तो उसे कहती [illegible] उस समय मेरे स्थानपर तुम्हारी पत्नी हो और तुम्हारे स्थान पर मेरे पति [illegible] क्या तुम उसे सह सकोंग?"[6] ऐसा [illegible] ती है तों डेविड कहता है की, हमारे यहाँ ऐसा कोई बन्धन नही है। सुनिता उसे समझाती है। इसमें भारतीय संस्कृति के गुण उजागर होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि, आज भारतीय संस्कति का विश्व में नाम लिया जा रहा है। लेकिन जिस भारतीय संस्कृति के रहन सहन, खान पान विचारों को विश्व में सम्मान रहा है। लेकिन जिस भारतीय संस्कृति का प्रभाव पाश्चात्य देशों में हो रहा है। उसी प्रकार पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर हो रहा हैं। भारतीय संस्कृति में नारी को स्वंय का स्वतंत्र्य नहीं, परम्परा, प्रथा, संस्कृति में जकडी रहती है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण नारी आज पुरुष के आगे है। विष्णु प्रभाकर जी ने 'अर्ध्दनारीश्वर' उपन्यास में भारतीय संस्कृति के दोषो को दुर करना तथा पाश्चात्य संस्कृति के अच्छे मूल्यों को अवगत करना चाहते हैं। इससे एक उत्कृष्ट नारी पुरुष 'अर्ध्दनारीश्वर' बन जाएगें।

संदर्भ :–

1. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 34
2. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 146
3. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 72
4. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 56
5. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 76
6. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 148